डा॰ गिरजा उरांव
एसोसिएट प्रो॰
R.m.c. सासाराम

बी॰ ए॰ पार्ट - III Hons
सत्र - 2019 - 20
विषय - PSY Paper

समाज मनोविज्ञान के अध्ययन की प्रयोगात्मकविधि के गुण और दोषों की विवेचना करें!
(Discuss the merits and demerits of Experimental method of the study of Social psychology.)

प्रत्येक विषय अपने अध्ययन के लिए अलग-2 विधियों का प्रयोग करता है। समाज मनोविज्ञान भी एक प्रगतिशील विज्ञान है जिसमें विषय-वस्तु के अध्ययन में परिवर्तन के साथ-2 नयी-2 पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। फिर भी समाज मनोविज्ञान की विधियाँ भौतिक विज्ञान की तरह निश्चित और वैज्ञानिक नहीं मानी जाती हैं। क्योंकि समाज मनोविज्ञान प्राणी की क्रियाओं का अध्ययन सामाजिक परिस्थितियों में करता है। जिसपर अणु और तत्वों की तरह पूर्ण अधिकार नहीं रखा जा सकता। समाज मनोविज्ञान की काल्पनिक विधियों के आत्मगत और अस्पष्ट होने के कारण इससे प्रदत्त निष्कर्षों को विश्वसनीय और सत्य नहीं माना जाता था। 1850 ई॰ और 1860 ई॰ के मध्य फ्रेडन ने सर्वप्रथम समाज मनोविज्ञान का अध्ययन प्रयोगात्मक रूप में प्रारम्भ किया। डेमिल द्वारा सामाजिक व्यवहार का मूल्य अध्ययन 1917 ई॰ के लगभग पोल आयोवा और अन्य अमेरिकन बाल-विकास अनुसंधान संस्थाओं में किया गया। 1935 ई॰ बाद जनमत जैसी आधुनिक सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए बहुत सी संस्थायें खोली गयी।

इस तरह स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान में समय परिवर्तन के साथ-२ नये-२ विधियों द्वारा अध्ययन किया जाने लगा है। जिससे सामाजिक समस्या सम्बन्धी यथेष्ट और यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जा सके। समाज मनोविज्ञान में निरीक्षण विधि और प्रयोगात्मक विधि की प्रगति आधुनिक युग में तेजी से हो रही है। अतः दोनों विधियों का अध्ययन करना ही अधिक प्रासंगिक है।

**प्रयोगात्मक पद्धति (Experimental Method):-**

प्रयोगात्मक विधि का अभिप्राय अवलोकन की उस विधि से है जिसमें कुछ सम्बंधित परिस्थितियों पर नियंत्रण किया जाता है और कुछ परिवर्तनशील परिस्थितियों के प्रभाव का सामाजिक पद्धति स्थिति में अध्ययन होता है। इस प्रकार के प्रयोग से हमें यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार की परिस्थिति में व्यक्ति किस प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करता है। दूसरे शब्दों में परीक्षात्मक पद्धति का प्रयोग नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है। इसे एक निर्धारित योजना के आधार पर सम्पन्न किया जाता है। <u>ग्रीन तथा न्यूकाम्ब</u> ने प्रयोगात्मक पद्धति को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "प्रयोगात्मक विधि सर्वोत्तम है, यह विश्लेषण की प्राविधिक पूर्णता है। इसका प्रयोग समस्या को परिभाषित करने के बाद किया जाता है। इसकी विशेषतायें इस प्रकार व्यवस्थित है ताकि हम जानते हैं कि किन बातों को व्यवस्थित किया और मापा जा सकेगा।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से प्रयोगात्मक-विधि की कई विशेषताओं का पता चलता है :-